

المجلس البلدي

إعداد: بداح العنزي | b_alenzi@hotmail.com

العنزي يسأل عن تخصيص أراضٍ لصالات الأفراح ضمن مشاريع الرعاية السكنية الجديدة

3 ق و 4 - مشروع النعيم «المساكن المبصرة»؟
● إذا كانت الإجابة بنعم، هل تم التنازل من قبل المؤسسة العامة للرعاية السكنية للأراضي التي خصصت لصالات الأفراح في تلك المشاريع؟
● هل تم تسليم الحدود أو إصدار رخص بناء لصالات الأفراح متعددة الأغراض المخصصة لوزارة الشؤون كونها الجهة المشرفة المسؤولة أو أي جهة أخرى من قبل البلدية؟
● في حال عدم التخصيص، هل توجد خطة مستقبلية من قبل المؤسسة العامة للرعاية السكنية لتخصيص أراضٍ لهذا الغرض لتلبية احتياجات السكان مع ضرورة التنسيق بين البلدية والمؤسسة العامة للرعاية السكنية ووزارة الشؤون؟

احتياجات المواطنين وتعزيز جودة الحياة بتوفير بيئة ملائمة لإقامة الفعاليات والمناسبات بأسلوب منظم وآمن وبما يتماشى مع رؤية الكويت نحو تنمية عمرانية وعملية متكاملة.
وعلى ذلك، أتقدم بالأسئلة التالية:
● هل تم تخصيص أراضٍ لصالات أفراح متعددة الأغراض في المناطق التابعة للمؤسسة العامة للرعاية السكنية ضمن خطتها في مدينة المطراع السكنية - منطقة السليم الجديدة - مدينة جابر الأحمد السكنية - مدينة صباح الأحمد السكنية - مدينة جنوب - مدينة جنوب صباح الأحمد والنخضة - شمال غرب الصليبيخات - منطقة غرب عبدالله المبارك - منطقة جنوب عبدالله المبارك - خيطان



عبدالله العنزي

قدم عضو المجلس البلدي عبدالله العنزي سؤالاً بخصوص صالات الأفراح متعددة الأغراض التي تقع ضمن خطة المشاريع الإسكانية.
وقال العنزي في سؤاله: بالإشارة إلى قانون 33 لسنة 2016 بشأن البلدية واختصاصات المجلس البلدي، تعد صالات الأفراح متعددة الأغراض من المرافق الحيوية التي تلي احتياجات المجتمع بإقامة المناسبات الاجتماعية، والثقافية والرسومية، مثل حفلات الزواج، واللقاءات العائلية، والأنشطة المجتمعية وتبرير أهميتها في توفير بيئة منظمة وآمنة تواكب متطلبات الأهل، ما ينعكس إيجاباً على النظام العام والمظهر الحضاري للمنطقة، وتبرز أهمية تخصيص مثل هذه الصالات

ضمن المشاريع التابعة للمؤسسة العامة للرعاية السكنية لتكون جزءاً من الخدمات المجتمعية المتكاملة التي تقدم للمواطنين - مرفق كتبا صادر عن المؤسسة العامة للرعاية السكنية بتاريخ 2024/7/21 - وعلى هذا، فإن توفير مثل هذه المرافق في المناطق السكنية يعكس حرص الجهات المعنية على تلبية

«الرقابة التجارية وحماية المستهلك» تشدد قبضتها: 702 ضبطية و3494 بلاغاً إلكترونياً

«التجارة»: تفاعل قياسي عبر «سهل» و«واتساب» و120 مخالفة تراخيص خلال نوفمبر الماضي



جانب من رصد المخالفات

جانب من الحملات التفتيشية لإدارة الرقابة التجارية

إحصائية إدارة الرقابة التجارية وحماية المستهلك لشهر نوفمبر 2025	
العدد	أعمال المفتشين
702	محاضر الضبط
120	مخالفات التراخيص
189	الشكاوى
3494	شكاوى البوابة (WhatsApp) تطبيق (سهل)
30	إجمالي معاملات أخرى

تعزيز الرقابة الاستباقية، وتكثيف الجولات التفتيشية، وتطوير آليات تلقي الشكاوى، بما يساهم في تحقيق بيئة تجارية عادلة، وضمان حماية المستهلك، وترسيخ مبدأ الشفافية والانضباط في الأسواق.

أظهرت إحصائية لوزارة التجارة والصناعة أن إدارة الرقابة التجارية وحماية المستهلك وأصلت خلال شهر نوفمبر تنفيذ حملاتها التفتيشية المكثفة في مختلف القطاعات، في إطار حرص الوزارة على ضبط الأسواق وحماية حقوق المستهلكين. ووفق الإحصائية التي أطلقت عليها «الأنباء» أن إجمالي محاضر الضبط التي تم تحريرها خلال الشهر بلغ 702 محضر، وذلك ضمن أعمال التفتيش الميداني التي شملت أنشطة تجارية وخدمية متعددة، مؤكدة أن هذه الإجراءات تأتي في سياق تطبيق القوانين واللوائح المنظمة للأسواق.

وأضافت أن عدد مخالفات التراخيص وصل إلى 120 مخالفة، ما يعكس استمرار الجهود الرقابية في متابعة مدى التزام المنشآت بالاشتراطات القانونية المعتمدة، والتصدي لأي تجاوزات تؤثر على سلامة السوق أو حقوق المستهلك. وفيما يتعلق بتفاعل الجمهور، أشارت الإحصائية إلى تسجيل 189 شكوى مباشرة، إلى جانب 3494 شكوى واستفسار عبر البوابة الإلكترونية للوزارة، وخدمة «واتساب»، وتطبيق «سهل»، ما يعكس تصاعد اعتماد المستهلكين على الوسائل الرقمية للتواصل وتقديم البلاغات. وقالت مصادر لـ «الأنباء» إن هذه الأرقام تعكس ارتفاع مستوى الوعي لدى المستهلكين بأهمية الإبلاغ عن المخالفات، فضلاً عن فاعلية القنوات الإلكترونية التي وفرتها الوزارة لتسهيل التواصل وتسريع إجراءات المتابعة والمعالجة. ولفتت إلى أن الإدارة أنجزت خلال الفترة ذاتها 30 معاملة أخرى ضمن إطار العمل الرقابي والتنظيحي، مؤكدة أن فريق التفتيشي مستمرة في أداء مهامها وفق خطة رقابية مرنة

وزارة العدل

إعلان عن بيع عقارات بالمزاد العلني

- تعلن إدارة الكتاب بالحكمة الكلية عن العقارات الموصوفة فيما يلي بالمزاد العلني وذلك يوم الخميس الموافق 2026/1/29 - قاعة 5 - بالدور الثامن بقصر العدل الجديد الساعة التاسعة صباحاً - وذلك تنفيذاً للحكم المحكمة الصادر في الدعوى رقم 2015/199-2016/199-2017/199-2018/199-2019/199-2020/199-2021/199-2022/199-2023/199-2024/199-2025/199-2026/199-2027/199-2028/199-2029/199-2030/199-2031/199-2032/199-2033/199-2034/199-2035/199-2036/199-2037/199-2038/199-2039/199-2040/199-2041/199-2042/199-2043/199-2044/199-2045/199-2046/199-2047/199-2048/199-2049/199-2050/199-2051/199-2052/199-2053/199-2054/199-2055/199-2056/199-2057/199-2058/199-2059/199-2060/199-2061/199-2062/199-2063/199-2064/199-2065/199-2066/199-2067/199-2068/199-2069/199-2070/199-2071/199-2072/199-2073/199-2074/199-2075/199-2076/199-2077/199-2078/199-2079/199-2080/199-2081/199-2082/199-2083/199-2084/199-2085/199-2086/199-2087/199-2088/199-2089/199-2090/199-2091/199-2092/199-2093/199-2094/199-2095/199-2096/199-2097/199-2098/199-2099/199-2100/199-2101/199-2102/199-2103/199-2104/199-2105/199-2106/199-2107/199-2108/199-2109/199-2110/199-2111/199-2112/199-2113/199-2114/199-2115/199-2116/199-2117/199-2118/199-2119/199-2120/199-2121/199-2122/199-2123/199-2124/199-2125/199-2126/199-2127/199-2128/199-2129/199-2130/199-2131/199-2132/199-2133/199-2134/199-2135/199-2136/199-2137/199-2138/199-2139/199-2140/199-2141/199-2142/199-2143/199-2144/199-2145/199-2146/199-2147/199-2148/199-2149/199-2150/199-2151/199-2152/199-2153/199-2154/199-2155/199-2156/199-2157/199-2158/199-2159/199-2160/199-2161/199-2162/199-2163/199-2164/199-2165/199-2166/199-2167/199-2168/199-2169/199-2170/199-2171/199-2172/199-2173/199-2174/199-2175/199-2176/199-2177/199-2178/199-2179/199-2180/199-2181/199-2182/199-2183/199-2184/199-2185/199-2186/199-2187/199-2188/199-2189/199-2190/199-2191/199-2192/199-2193/199-2194/199-2195/199-2196/199-2197/199-2198/199-2199/199-2200/199-2201/199-2202/199-2203/199-2204/199-2205/199-2206/199-2207/199-2208/199-2209/199-2210/199-2211/199-2212/199-2213/199-2214/199-2215/199-2216/199-2217/199-2218/199-2219/199-2220/199-2221/199-2222/199-2223/199-2224/199-2225/199-2226/199-2227/199-2228/199-2229/199-2230/199-2231/199-2232/199-2233/199-2234/199-2235/199-2236/199-2237/199-2238/199-2239/199-2240/199-2241/199-2242/199-2243/199-2244/199-2245/199-2246/199-2247/199-2248/199-2249/199-2250/199-2251/199-2252/199-2253/199-2254/199-2255/199-2256/199-2257/199-2258/199-2259/199-2260/199-2261/199-2262/199-2263/199-2264/199-2265/199-2266/199-2267/199-2268/199-2269/199-2270/199-2271/199-2272/199-2273/199-2274/199-2275/199-2276/199-2277/199-2278/199-2279/199-2280/199-2281/199-2282/199-2283/199-2284/199-2285/199-2286/199-2287/199-2288/199-2289/199-2290/199-2291/199-2292/199-2293/199-2294/199-2295/199-2296/199-2297/199-2298/199-2299/199-2300/199-2301/199-2302/199-2303/199-2304/199-2305/199-2306/199-2307/199-2308/199-2309/199-2310/199-2311/199-2312/199-2313/199-2314/199-2315/199-2316/199-2317/199-2318/199-2319/199-2320/199-2321/199-2322/199-2323/199-2324/199-2325/199-2326/199-2327/199-2328/199-2329/199-2330/199-2331/199-2332/199-2333/199-2334/199-2335/199-2336/199-2337/199-2338/199-2339/199-2340/199-2341/199-2342/199-2343/199-2344/199-2345/199-2346/199-2347/199-2348/199-2349/199-2350/199-2351/199-2352/199-2353/199-2354/199-2355/199-2356/199-2357/199-2358/199-2359/199-2360/199-2361/199-2362/199-2363/199-2364/199-2365/199-2366/199-2367/199-2368/199-2369/199-2370/199-2371/199-2372/199-2373/199-2374/199-2375/199-2376/199-2377/199-2378/199-2379/199-2380/199-2381/199-2382/199-2383/199-2384/199-2385/199-2386/199-2387/199-2388/199-2389/199-2390/199-2391/199-2392/199-2393/199-2394/199-2395/199-2396/199-2397/199-2398/199-2399/199-2400/199-2401/199-2402/199-2403/199-2404/199-2405/199-2406/199-2407/199-2408/199-2409/199-2410/199-2411/199-2412/199-2413/199-2414/199-2415/199-2416/199-2417/199-2418/199-2419/199-2420/199-2421/199-2422/199-2423/199-2424/199-2425/199-2426/199-2427/199-2428/199-2429/199-2430/199-2431/199-2432/199-2433/199-2434/199-2435/199-2436/199-2437/199-2438/199-2439/199-2440/199-2441/199-2442/199-2443/199-2444/199-2445/199-2446/199-2447/199-2448/199-2449/199-2450/199-2451/199-2452/199-2453/199-2454/199-2455/199-2456/199-2457/199-2458/199-2459/199-2460/199-2461/199-2462/199-2463/199-2464/199-2465/199-2466/199-2467/199-2468/199-2469/199-2470/199-2471/199-2472/199-2473/199-2474/199-2475/199-2476/199-2477/199-2478/199-2479/199-2480/199-2481/199-2482/199-2483/199-2484/199-2485/199-2486/199-2487/199-2488/199-2489/199-2490/199-2491/199-2492/199-2493/199-2494/199-2495/199-2496/199-2497/199-2498/199-2499/199-2500/199-2501/199-2502/199-2503/199-2504/199-2505/199-2506/199-2507/199-2508/199-2509/199-2510/199-2511/199-2512/199-2513/199-2514/199-2515/199-2516/199-2517/199-2518/199-2519/199-2520/199-2521/199-2522/199-2523/199-2524/199-2525/199-2526/199-2527/199-2528/199-2529/199-2530/199-2531/199-2532/199-2533/199-2534/199-2535/199-2536/199-2537/199-2538/199-2539/199-2540/199-2541/199-2542/199-2543/199-2544/199-2545/199-2546/199-2547/199-2548/199-2549/199-2550/199-2551/199-2552/199-2553/199-2554/199-2555/199-2556/199-2557/199-2558/199-2559/199-2560/199-2561/199-2562/199-2563/199-2564/199-2565/199-2566/199-2567/199-2568/199-2569/199-2570/199-2571/199-2572/199-2573/199-2574/199-2575/199-2576/199-2577/199-2578/199-2579/199-2580/199-2581/199-2582/199-2583/199-2584/199-2585/199-2586/199-2587/199-2588/199-2589/199-2590/199-2591/199-2592/199-2593/199-2594/199-2595/199-2596/199-2597/199-2598/199-2599/199-2600/199-2601/199-2602/199-2603/199-2604/199-2605/199-2606/199-2607/199-2608/199-2609/199-2610/199-2611/199-2612/199-2613/199-2614/199-2615/199-2616/199-2617/199-2618/199-2619/199-2620/199-2621/199-2622/199-2623/199-2624/199-2625/199-2626/199-2627/199-2628/199-2629/199-2630/199-2631/199-2632/199-2633/199-2634/199-2635/199-2636/199-2637/199-2638/199-2639/199-2640/199-2641/199-2642/199-2643/199-2644/199-2645/199-2646/199-2647/199-2648/199-2649/199-2650/199-2651/199-2652/199-2653/199-2654/199-2655/199-2656/199-2657/199-2658/199-2659/199-2660/199-2661/199-2662/199-2663/199-2664/199-2665/199-2666/199-2667/199-2668/199-2669/199-2670/199-2671/199-2672/199-2673/199-2674/199-2675/199-2676/199-2677/199-2678/199-2679/199-2680/199-2681/199-2682/199-2683/199-2684/199-2685/199-2686/199-2687/199-2688/199-2689/199-2690/199-2691/199-2692/199-2693/199-2694/199-2695/199-2696/199-2697/199-2698/199-2699/199-2700/199-2701/199-2702/199-2703/199-2704/199-2705/199-2706/199-2707/199-2708/199-2709/199-2710/199-2711/199-2712/199-2713/199-2714/199-2715/199-2716/199-2717/199-2718/199-2719/199-2720/199-2721/199-2722/199-2723/199-2724/199-2725/199-2726/199-2727/199-2728/199-2729/199-2730/199-2731/199-2732/199-2733/199-2734/199-2735/199-2736/199-2737/199-2738/199-2739/199-2740/199-2741/199-2742/199-2743/199-2744/199-2745/199-2746/199-2747/199-2748/199-2749/199-2750/199-2751/199-2752/199-2753/199-2754/199-2755/199-2756/199-2757/199-2758/199-2759/199-2760/199-2761/199-2762/199-2763/199-2764/199-2765/199-2766/199-2767/199-2768/199-2769/199-2770/199-2771/199-2772/199-2773/199-2774/199-2775/199-2776/199-2777/199-2778/199-2779/199-2780/199-2781/199-2782/199-2783/199-2784/199-2785/199-2786/199-2787/199-2788/199-2789/199-2790/199-2791/199-2792/199-2793/199-2794/199-2795/199-2796/199-2797/199-2798/199-2799/199-2800/199-2801/199-2802/199-2803/199-2804/199-2805/199-2806/199-2807/199-2808/199-2809/199-2810/199-2811/199-2812/199-2813/199-2814/199-2815/199-2816/199-2817/199-2818/199-2819/199-2820/199-2821/199-2822/199-2823/199-2824/199-2825/199-2826/199-2827/199-2828/199-2829/199-2830/199-2831/199-2832/199-2833/199-2834/199-2835/199-2836/199-2837/199-2838/199-2839/199-2840/199-2841/199-2842/199-2843/199-2844/199-2845/199-2846/199-2847/199-2848/199-2849/199-2850/199-2851/199-2852/199-2853/199-2854/199-2855/199-2856/199-2857/199-2858/199-2859/199-2860/199-2861/199-2862/199-2863/199-2864/199-2865/199-2866/199-2867/199-2868/199-2869/199-2870/199-2871/199-2872/199-2873/199-2874/199-2875/199-2876/199-2877/199-2878/199-2879/199-2880/199-2881/199-2882/199-2883/199-2884/199-2885/199-2886/199-2887/199-2888/199-2889/199-2890/199-2891/199-2892/199-2893/199-2894/199-2895/199-2896/199-2897/199-2898/199-2899/199-2900/199-2901/199-2902/199-2903/199-2904/199-2905/199-2906/199-2907/199-2908/199-2909/199-2910/199-2911/199-2912/199-2913/199-2914/199-2915/199-2916/199-2917/199-2918/199-2919/199-2920/199-2921/199-2922/199-2923/199-2924/199-2925/199-2926/199-2927/199-2928/199-2929/199-2930/199-2931/199-2932/199-2933/199-2934/199-2935/199-2936/199-2937/199-2938/199-2939/199-2940/199-2941/199-2942/199-2943/199-2944/199-2945/199-2946/199-2947/199-2948/199-2949/199-2950/199-2951/199-2952/199-2953/199-2954/199-2955/199-2956/199-2957/199-2958/199-2959/199-2960/199-2961/199-2962/199-2963/199-2964/199-2965/199-2966/199-2967/199-2968/199-2969/199-2970/199-2971/199-2972/199-2973/199-2974/199-2975/199-2976/199-2977/199-2978/199-2979/199-2980/199-2981/199-2982/199-2983/199-2984/199-2985/199-2986/199-2987/199-2988/199-2989/199-2990/199-2991/199-2992/199-2993/199-2994/199-2995/199-2996/199-2997/199-2998/199-2999/199-3000/199-3001/199-3002/199-3003/199-3004/199-3005/199-3006/199-3007/199-3008/199-3009/199-3010/199-3011/199-3012/199-3013/199-3014/199-3015/199-3016/199-3017/199-3018/199-3019/199-3020/199-3021/199-3022/199-3023/199-3024/199-3025/199-3026/199-3027/199-3028/199-3029/199-3030/199-3031/199-3032/199-3033/199-3034/199-3035/199-3036/199-3037/199-3038/199-3039/199-3040/199-3041/199-3042/199-3043/199-3044/199-3045/199-3046/199-3047/199-3048/199-3049/199-3050/199-3051/199-3052/199-3053/199-3054/199-3055/199-3056/199-3057/199-3058/199-3059/199-3060/199-3061/199-3062/199-3063/199-3064/199-3065/199-3066/199-3067/199-3068/199-3069/199-3070/199-3071/199-3072/199-3073/199-3074/199-3075/199-3076/199-3077/199-3078/199-3079/199-3080/199-3081/199-3082/199-3083/199-3084/199-3085/199-3086/199-3087/199-3088/199-3089/199-3090/199-3091/199-3092/199-3093/199-3094/199-3095/199-3096/199-3097/199-3098/199-3099/199-3100/199-3101/199-3102/199-3103/199-3104/199-3105/199-3106/199-3107/199-3108/199-3109/199-3110/199-3111/199-3112/199-3113/199-3114/199-3115/199-3116/199-3117/199-3118/199-3119/199-3120/199-3121/199-3122/199-3123/199-3124/199-3125/199-3126/199-3127/199-3128/199-